Knowledge Consortium of Gujarat
Department of Higher Education - Government of Gujarat
Journal of Humanity - ISSN : 2279-0233
Continuous Issue-31 | August – September 2017

'आग में गर्मी कम क्यों हैं?' : समलैंगिकता की समस्या

समलैंगिक व्यक्ति वह चाहे 'गे', 'लेस्बियन' या 'बायो सेक्सुअल' हो उसे हमारे भारतीय समाज में मान्यता प्राप्त न होने की वजह से घृणा, तिरस्कार व अपमान का पात्र बनना पड़ता हैं। हमारा समाज शादी से इतर एक पुरुष का दूसरी स्त्री के साथ संबंध स्वीकार करता हैं पर पुरुष का पुरुष के साथ संबंध स्वीकृत नहीं करता। न स्त्री का दूसरी स्त्री के साथ। कुछ एक देशों में समलैंगिकता को कानूनी समर्थन मिल चुका हैं, जबकि भारतीय संविधान में धारा 377 के तहत इसे समर्थन प्राप्त नहीं हुआ हैं। वैसे 'मानसिक स्वास्थ्य संगठन' ने समलैंगिकता को मानव संबंधों का नॉर्मल रूप माना हैं। यह मनुष्य के शरीर में होने वाली एक 'रासायनिक प्रक्रिया' हैं, जिसका कभी कभी स्वयं उस व्यक्ति को भी पता नहीं होता। समाज में मानहानी होने के डर की वजह से समलैंगिक व्यक्ति संकुचित ग्रंथि से पीड़ित होने लगते हैं। कभी कभी कुण्ठा और घुटन इतनी बढ़ जाती हैं कि वह निराश होकर आत्महत्या भी कर लेते हैं। अपराध वृत्ति की तरफ भी मुड़ जाते हैं। अगर समाज द्वारा उन्हें समझने की कोशिश की जाए तो इस समस्या का कुछ हद तक समाधान मिल सकता हैं। तथा समलैंगिक व्यक्तियों में हो रही आत्महत्या के प्रमाण को कम किया जा सकता हैं।

प्रवासी साहित्यकार सुधा ओम ढींगरा ने अपनी कहानी 'आग में गर्मी कम क्यों हैं?' में समलैंगिकता की समस्या को उठाकर यथार्थ से हमारा सामना करवाया हैं। सुधा ओम ढींगरा ने अपनी कहानी 'आग में गर्मी कम क्यों हैं?' में समलैंगिकता जैसे संवेदनात्मक विषय पर अपनी कलम चलाई हैं। इस कहानी की पृष्ठभूमि अमेरिका के एक भारतीय परिवार के यथार्थ की ठोस जमीन पर तैयार की गयी हैं। इस बात का उल्लेख करते हुए स्वयं सुधा जी ने अपने आत्मकथ्य में कहा हैं कि "एक भारतीय (जिसका नाम गुप्त रखा गया हैं) ने मालगाड़ी के आगे आकर जान दे दी। दुर्घटना के इस समाचार और उसके बाद की स्थितियों ने मुझे सोचने पर विवश कर किया। शोध शुरू हो गया।"[1] और इस तरह एक वास्तविक घटना से 'आग में गर्मी कम क्यों हैं?' कहानी का निर्माण हुआ।

शेखर अमेरिका की सिस्को सिस्टम कंपनी में सॉफ्टवेयर इंजीनियर था। शेखर और साक्षी की शादी को नौ साल हुए हैं। आज वह अंत्येष्टि गृह के एक कोने में बैठी अपने सामने पड़ी प्लास्टिक बैग को एक टक देख रही हैं। जिसमें उसके पति की लाश पड़ी हैं। शेखर का शरीर गाड़ी से कट गया हैं, आत्महत्या की हैं उसने। शेखर की आत्महत्या के लिए भी साक्षी स्वयं को जिम्मेदार मानती हैं। वह चाहती तो आत्महत्या रोक सकती थी, लेकिन कैसे? शेखर ने साक्षी को कभी कुछ नहीं बताया और अंत में भी जब जेम्ज शेखर को छोड़ चला जाता हैं तब भी उसने साक्षी को कुछ नहीं बताया। वैसे साक्षी ने शेखर को बहुत चाहा हैं। शेखर हमेशा नौकरी से देर से आता। इस वजह से साक्षी परेशान रहती। वह न घर में ध्यान देता न बच्चों में। सारी जिम्मेदारी साक्षी को ही निभानी पड़ती। साक्षी जब पड़ोस के लोगों को एक दूसरे के साथ समय बिताते देखती तो उसके ह्रदय में दर्द होता, उसे ऐसा अपनापन शेखर से कभी नहीं मिला था। फिर जब शेखर घर आता तो उस पर वह गुस्सा हो जाती। लेकिन शेखर सारी बातें हँसने में निकाल देता कहता कि, "प्रोजेक्ट पर काम चल रहा हैं, सब लोग बैठे थे, मैं कैसे उठकर आता। ऐसे में देर तो हो ही जाती हैं।"[2] सास -ससुर के कहने पर वह शांत हो जाती। साक्षी ने फिजिक्स में एम.एस. सी. की डिग्री हासिल की हैं

और अमेरिका से डिप्लोमा की भी। वह दिन भर एक सिंगल मदर की तरह घर व बाहर तथा बच्चों का काम करते हुए थक जाती। शेखर ने उसे क्रेड़िट कार्ड भी दे रखा था ताकि साक्षी उससे कोई फरियाद न करें। जब भी साक्षी थक कर शेखर पर भड़क उठती तब वह उसे अपनी बाहों के घेरे में लेकर मुस्कुराते हुए पिघला देता। लेकिन फिर भी साक्षी को शेखर के साथ अपने रिश्तों में गिरावट ही महसूस हो रही थी। "रिश्तों के ठोस धरातल में छेद हो गया था; जैसे कुछ रिस रहा था वहाँ से, वह उसे ढूँढ़ नहीं पा रही थी। शेखर के प्यार में वह कर्तव्य अधिक और मादकता कम पाती थी।"[3] इसके लिए भी वह स्वयं को ही दोषी ठहराती रही कि शायद उसी में कोई कमी हैं जिसकी वजह से शेखर उससे उखड़ा उखड़ा रह रहा हैं। परिवार के प्रति भी वह एक दम निरस व निर्लिप्त था। तब साक्षी चिंतित हो तर्क करने लगती कि शादी के इतने सालों बाद शायद रिश्तों में गिरावट आ जाती होगी। "शेखर की बाहों के घेरे में उसे पहले सी गर्माहट नहीं मिलती थी। ठंड़ापन महसूस होता। संसर्ग में भावनाओं का संवेग न होता।...कोमल क्षणों में भी वह कहीं खोया रहता। हर बार उसका शरीर चुगली काटता कि शेखर का दिल कहीं ओर था, वह उसके साथ होकर भी उसके साथ नहीं था। वह तृप्त होकर भी अतृप्त रहती।"[4] जिसकी वजह से साक्षी की मानसिक स्थिति बिगड़ने लगी थी। उसने डॉक्टर से संपर्क कर टेस्ट करवाए तब डॉक्टर ने सलाह दी कि वह नौकरी करें ताकि अपने आसपास के वातावरण से कुछ देर के लिए मुक्त रह पाए।

साक्षी को वेकटैक कम्यूनिटी कॉलेज में फिजिक्स पढ़ाने की नौकरी मिल गयी। शेखर भी उत्साह से बच्चों की जिम्मेदारी स्वीकार कर जेम्ज के साथ घर पर ही प्रोजेक्ट का काम करने लगा। साक्षी कहती हैं कि "पहले दिन जब वह जेम्ज से मिली थी, तो किसी मैगज़ीन के पृष्ठों से निकला चेहरा लगा था। पुष्ट देह। नीली आँखें। भूरे बाल। शिष्ट और शर्मिला। व्यवहार में सभ्य। बच्चों को मिलते ही वह उनका दोस्त बन गया था। कुछ दिनों में वह उसकी प्रशंसिका हो गई थी।"[5] एक दिन उसके कॉलेज में क्लास केंसिल हो गयी। वह घर जल्दी आ गयी। घर में सन्नाटा छाया था। "ज्यों ही उसने दरवाजा खोला, बिस्तर पर जेम्ज और शेखर अंतरंग क्रियाओं में लीन थे। वह दृश्य उसके अंदर की औरत को झकझोर कर ,उसके अस्तित्व को जड़ों से उखाड़ गया। वह तेजी से वॉशरूम की तरफ भागी, वरना वहीं कारपेट पर उल्टी कर देती। उसे अपने बदन से बदबू आने लगी थी।"[6] दूसरे कमरे के बाथरूम में जाकर वह शॉवर के नीचे जाकर खड़ी रह गयी उसे अपने बदन से बदबू आने लगी और रगड़ रगड़ कर अपने बदन को धोने लगी। आज तक रिश्तों की गिरावट के लिए वह स्वयं को दोषी मानती रही जबकि शेखर ने उसके साथ धोखा किया था। आज उसके मन में सारी बातें स्पष्ट हुई कि शेखर के साथ अंतरंग पलों में भी गर्माहट की कमी नज़र क्यों आ रही थी। जेम्ज के साथ रत्यात्मकता करने के बाद भी वह उसे छूता रहा यह सोच कर भी उसे घिन आने लगी। दर्द व पीड़ा से उसका बदन कराह ने लगा। शेखर की बेवफ़ाई का दर्द असहय हो रहा था। उसने भारत में अपने सास ससुर व माता पिता को यह बताना उचित न समझा और सारा दर्द अकेले ही झेल गयी। क्योंकि उनके रिश्तेदारों की सोच उदारवादी नहीं हैं। अंतत: साक्षी ने यह विष पीकर स्वयं में समाहित कर लिया।

वास्तव में शेखर को स्वयं अपनी इस शारीरिक जरूरत व संवेगों का पता नहीं था। वह लड़कियों के प्रति बहुत आकर्षित होता था, तभी तो उसने साक्षी के साथ शादी की थी। कुछ सालों बाद जेम्ज उसका प्रोजेक्ट लीडर बनकर आया और उसके साथ रिश्तों के बहाव में वह बह गया। शेखर में अपनी इस वृत्ति की वजह से अपराध बोध व कुंठा का भाव उत्पन्न हो गया था। तभी उसने मनोविशेषज्ञ की सलाह ली थी, उन्हीं की मदद से वह अपनी शारीरिक संरचना समझ पाया था। शेखर स्वयं साक्षी के सामने स्वीकार करता हैं कि "मेरी शारीरिक संरचना ऐसी हैं कि मैं दोनों लिंगों के प्रति आकर्षित हो सकता हूँ।... अभी नये शोध से पता चला हैं कि पुरुषों में भी मेनोपोज होता हैं, जिसे एन्ड्रोपोज कहते हैं और उनमें धीरे - धीरे शारीरिक

परिवर्तन होते हैं, महिलाओं की तरह एक दम नहीं । बाई सेक्सुअल इंसान उम्र के किसी भी हिस्से में, स्त्री-पुरुष दोनों की तरफ आकर्षित हो सकता हैं और मेरी बद किस्मती हैं कि मैं बाई सेक्सुअल हूँ।"[7] वैसे साक्षी ने साइंस पढ़ी हैं। वह हारमोंज के अनुपात की मात्रा को जानती हैं। इस में शेखर का कोई दोष नहीं हैं। उसे दु:ख इस बात का नहीं था कि शेखर 'बाई सेक्सुअल' हैं पर दु:ख इस बात का था कि इतना सब कुछ होने पर भी शेखर ने उससे यह बात छिपायी। जब कि उसका मानसिक संतुलन भी बिगड़ने लगा था फिर भी शेखर ने उसे यह बताना उचित न समझा। वह स्वयं में ही रचा पचा रहा। अगर उसने साक्षी को सब बता दिया होता तो आज उसे इतनी चोट न पहुँचती। साक्षी ने शेखर को मुक्त कर दिया था जेम्ज के लिए। अब शेखर भी सप्ताह में एक बार घर आने लगा। वह अपनी जिम्मेदारी व कर्तव्यों के प्रति और लापरवाह हो गया। वह गुमसुम भी रहने लगा था। जेम्ज उसे छोड़कर चला गया इससे दु:खी होकर उसने आत्महत्या कर ली। शेखर ने जो पत्र लिखा उसमें उसने स्वीकार किया था कि "जेम्ज उसे किसी और के लिए छोड़ गया, वह उसका अलगाव सह नहीं सका। वह जेम्ज को बहुत प्यार करता था, अब उसके जीवन का कोई अर्थ व औचित्य नहीं रहा। ऐसे जीवन को समाप्त करना उसने बेहतर समझा।"[8] अंत्येष्टि गृह में बैठी साक्षी की नजरों के सामने शेखर की लाश पड़ी हैं। वह इतनी जड़ हो गयी हैं कि उसकी आँखों से आँसू भी नहीं निकलते हैं। दाह संस्कार के बाद वह जैसे ही बाहर निकली तो वहाँ उसने जेम्ज को सर जुकाए खड़ा देखा। अब जेम्ज को भी पछतावा हो रहा हैं, लेकिन उसका कोई अर्थ नहीं हैं। साक्षी बिना कुछ बोले वहाँ से चली जाती हैं।

संदर्भ सूची

I. नई सदी का कथा समय, संपा. पंकज सुबीर, आत्मकथ्य, सुधा ओम ढींगरा,शिवना प्रकाशन, म.प्र., सिहोर, प्रथम संस्करण- 2014, पृ. 223
II. कमरा नंबर 103, आग में गर्मी कम क्यों हैं ?,सुधा ओम ढींगरा, हिन्दी साहित्य निकेतन, बिजनौर (उ.प्र.), प्रथम संस्करण- फरवरी 2013, पृ. 12
III. वही, पृ.13
IV. वही, पृ.15
V. वही, पृ.15,16
VI. वही, पृ.16
VII. वही, पृ.19
VIII. वही, पृ.22

****

डॉ. उमा मेहता
आसिस्टन्ट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
एम.पी.शाह आर्ट्स एन्ड साइंस कॉलेज
सुरेन्द्रनगर

Copyright © 2012 - 2017 KCG. All Rights Reserved. | Powered By: Knowledge Consortium of Gujarat